|  |
| --- |
| 28. Januar 2024 |
| **04. Sonntag im Jahreskreis B** |
| Erste Lesung: Dtn 18,15-20; Zweite Lesung: 1 Kor 7,32-35; Evangelium: Mk 1,21-28 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 149, 1-3 | Liebster Jesu wir sind hier |
|  | GL 140, 1-3 | Kommt herbei |
|  | GL 392 | Lobe den Herren |
|  |  |
| Kyrie: | GL 155 | Kyrie |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 381, 1+3! | Ich meinen Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 95, 1-7c.7d-9 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 53, 1 | Hört auf die Stimme des Herrn |
|  | GL 31, 1 | Selig der Mensch |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 347, 2 | Der Geist des Herrn |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | Ruf: GL 174, 4 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Das Volk, das im Dunkel saß, hat ein helles Licht gesehen;* |
|  | *denen, die im Schattenreich des Todes wohnten,* |
|  | *Ist ein Licht erschienen.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 177 | Credo in unum Deum |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 360, 1+2! | Macht weit die Pforten |
|  | GL 146, 1-4 | Du rufst uns, Herr, an deinen Tisch |
|  | GL 422, 1-3! | Ich steh vor dir mit leeren Händen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 199 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 800 | Herr, gib uns deinen Frieden |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 377, 1+2 | O Jesu, all mein Leben bist du |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 384, 2-3 | Hoch sei gepriesen |